

SATHI

RAINBOW

ரெயின்போ சாத்தி

₽ P రెయిన్బో साधी रेनबो SATHII

# TEAM Work

Year 6, Issue 22 SPECIAL ISSUE

**EDITOR IN CHIEF** BHASHA SINGH

#### **ADVISIORY BOARD**

T.M. KRISHNA GEETA RAMASWAMY K. LALITHA, K. ANURADHA

#### **EDITORIAL BOARD**

CHANDA



SAHITYA (HYDERABAD)

AMITA KUMARI



MADHUMITA

AMBIKA, DEEPTI BEZWADA WILSON

CITIZEN JOURNALIST

PRIYADHARSHINI, CHENNAI

ARTI SINGHASAN, DELHI

MAUSAM KUMARI PATNA

AISHWARYA, BANGALLORE

AMAN KUMAR, HYDERABAD

CH.NIKITHA, HYDERABAD

SANTHOSH, BANGALLORE

SELVI M, CHENNAI

#### **CHILD JOURNALIST**

RUPAL ORAON, RANCHI

LAXMI, BANGALORE

VENISSA NIYOLA

SABINA KHATUN, KOLKATA

D'SOUZA, BANGALLORE

SUTAPA DOLUI, KOLKATA

SUDAMA, PATNA

SANOJ, PATNA

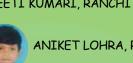
RACHNA, PATNA

MANAN, PATNA

ARJUN H, CHENNAI

DUBRAJ MALAR, RANCHI

PREETI KUMARI, RANCHI



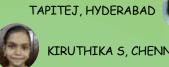
ANIKET LOHRA, RANCHI



DEEPAK AMAN, DELHI







KIRUTHIKA S, CHENNAI





JAYKAR K

GANGULLI

BANGALORE

SABARITHA

CHENNAI

SHREETANJALI

### V.DURGAPRASAD, HYDERABAD

#### SUPPORT TEAM

KRANTHI KIRAN ANANTAPUR

RAJASHREE CHAKRABORTY KOLKATA

> MADHURI MUMBAI

ANSHUL RAI **PATNA PARVEEN** 

KOKILAVANI M, CHENNAI

SHWETA **KACHHAP** 

PUNE

RANCHI

Design: ROHIT KUMAR RAI

#### RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय केंक्रे ● जिल्लामिलंडिया मार्क्रेक्री ● र्रुंक्थिल काक्रे ● त्रिरंगदा प्राशी



# हम बोलें दुनिया सुने...

#### दोस्तो

সাখী

<del>E</del>

**FILE** 

ரெயின்போ

రెయిన్బో

रेनबो

SATHI

**E** 

#ITH

ரெயின்போ

ক ক

రెయిన్బో

रेनबो साधी

SATHI

RAINBOW

हमारा परिवार बिल्कुल ख़ास है, बहुत ही स्पेशल और इसकी बहुत ठोस वजह है। अक्सर परिवार से लोग समझते हैं- माता-पिता, बच्चे और ज्यादा से ज्यादा दादा-दादी, नाना-नानी। लेकिन हमारा परिवार बहुत बड़ा है। जब हम अपने परिवार की बात करते हैं तो इसका मतलब होता है रेनबो होम्स।

हमारे परिवार में हमारे अभिभावक तो हैं ही, साथ ही हमारे साथ पढने वाले-रहने वाले, हम जैसे बच्चे हैं, होम मदर हैं, टीचर हैं, रेनबो की टीम है। यही वजह है कि हम हर संकट से ज्यादा बेहतर ढंग से मुकाबला कर पाते हैं। इस बॉन्डिंग को समझना हर किसी के लिए संभव नहीं है। इसके पीछे सालों-साल की संस्थागत मेहनत है, जिसकी वजह से ऐसा माहौल बना है जहां रेनबो होम्स में आने वाला हर बच्चा बराबर समझा जाता है। सबको एक ही ढंग की सुविधाएं मिलती हैं, खाने-पीने से लेकर पढ़ाई के अवसर, कोचिंग-ट्रेनिंग हासिल करने के बराबर के मौके मिलते हैं। हमारे इस अनुठे परिवार की नींव में केयर यानी

देखभाल की बहुत सोची-समझी डिजाइन है- जो बराबरी, समानता और बंधत्व पर टिकी हुई है। यहां भाव यह नहीं है कि कोई किसी पर उपकार कर रहा है, बल्कि यह है कि जो समाज में नाइंसाफी हुई है, जो समाज की गलतियों की वजह से आगे बढ़ने से वंचित रह गये हैं- उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना। इसी सोच की वजह से देश भर में मौजूद रेनबो होम्स का मूल मंत्र है- सभी बराबर है, किसी से भी किसी भी आधार पर भेदभाव करने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

रेनबो होम्स परिवार ने बहुत सोच-समझ कर बच्चों के अभिभावकों के साथ और ज्यादा करीब का रिश्ता बनाने की खास शुरुआत की है। परिजनों को सीधे-सीधे केयर के नेटवर्क से जोड़ना और उन्हें इस सफर में साथ लेना हमारा लक्ष्य है। रेनबो होम्स के इस पहलू को सामने लाने के लिए रेनबो साथी के इस अंक में हमने बिच्चयों-बच्चों के परिजनों से बातचीत करके, उनकी आवाज को सामने लाने की कोशिश की है। यह केयर की एक कड़ी का दूसरी कड़ी से जुड़ना है और इसी तरह से हम मानवता की बड़ी श्रखंला बनाएंगे। है ना!! हम लडेंगे, हम जीतेंगे !!!

### We speak, the world listens.

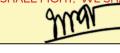
Our family is unique, very special and there are very strong reasons for that. Often, by family people will understand- father, mother, kids or if you extend it then grand parents. But our families are really very big. When we talk of family then we mean Rainbow Homes.

We of course have parents in our family, but we also have children like us, studying and living together, then there are Home mothers, teachers and the whole Rainbow team. That is the reason that we are capable of dealing all issues in better way. It is not possible for everyone to understand this bonding. Behind this goes huge institutional efforts of many years. Due to this, we were able to create an environment wherein every kid at the Rainbow Homes is considered to be equal. Each one gets same facilities- lodging, food and studies. Everyone gets equal opportunities to coaching and skill

training. Foundation of our this unique family is based upon very thoughtfully construed design of CARE. The feeling behind is that all those who have been facing injustice in the society, all who have been devoid off opportunities to grow due to inherent social structure, get chance to move ahead. Due to this thought process Rainbow Homes across the country believe in the basic tenet of equality, where there is no scope of discriminating with any one for any reason whatsoever.

Rainbow Homes also has a very close affinity with the families of the children staying at Homes. We have linked them to our care network so that they have equal stakes in this journey of their children. To highlight this aspect, in this issue of Rainbow Sathi we have talked to parents of the children staying in various Homes. This is in a way linking different aspects of care to each other. That is how, we will create a big chain of humanity. Isn't it!!

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!







ರೈನ್ಯಬೋ

ரெயின்போ சாத்தி

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

Illustrating Women's day! Anjali & Preeti, RFI, Kute, Ranchi ▼ Me Radi अन्तर्भादीय माहेला दिवस पर विद्यालय का सामाजिक त्याय होना क्ष लह के कार्य हेतू समाम बेतन/माजदुरी



nternational Women's Day is celebrated every year on a March 8. The earliest purported Women's Day ▲ observance, called "National Woman's Day" was held on February 28, 1909, in New York City, organized by the Socialist Party of America. In August 1910, an International Socialist Women's Conference was organized ahead of the general meeting of the Socialist Second International in Copenhagen, Denmark, where establishment of an annual "Women's Day" was proposed. The following year, on March 19, 1911, the first International Women's Day was marked by over a million people in Austria, Denmark, Germany, and Switzerland. Across Europe, women demanded the right to vote and to hold public office, and protested against employment sex discrimination. IWD initially had no set date, though it was generally celebrated in late February or early March. Americans continued to observe "National Women's Day" on the last Sunday in February, while Russia observed International Women's Day for the first time in 1913, on the last Saturday in February (albeit based on the Julian calendar, as in the Gregorian calendar, the date was March 8). In 1914, International Women's Day was held on March 8 for the first time in Germany, possibly because that date was a Sunday. In 1917, following the October Revolution, Bolsheviks Alexandra Kollontai

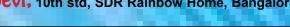
# TO REMEMBER WOMEN'S DAY



and Vladimir Lenin made IWD an official holiday in the Soviet Union. After the founding of the People's Republic of China on October 1, 1949, the State Council proclaimed that March 8 would be made an official holiday, with women given a half-day off. The United Nations began celebrating International Women's Day in 1975, which had been proclaimed the International Women's Year. In 1977, the United Nations General Assembly invited member states to proclaim March 8 as an official UN holiday for women's rights and world peace. It has since been commemorated annually by the UN and much of the world, with each year's observance centered on a particular theme or issue within women's rights.

Women are the real architects of the society. I want every girl to know that her voice can change the world. No matter, even if it takes a while, but you can handle every responsibility with a smile and without being afraid of anything.

Devi, 10th std, SDR Rainbow Home, Bangalore



Gyan Vigyan

জ

**BILL** 

ரெயின்போ

ক ক

రెయిన్బో

साधी

रेनबो

RAINBOW SATHI

రెయిన్బో साधी रेनबो

RAINBOW SATHI

ரெயின்போ ক ক





# क्यों ज़रूरी है महिला अधिकारों को याद रखना

Women's day by Lion's Club at Ranchi

तरराष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च को मनाया जाता है। सबसे पहले इस तरह के दिन की शुरुआत 'नेशनल वुमेंस डे' के तौर पर 28 फरवरी 1909 को न्यूयार्क में हुई थी जिसे अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने आयोजित किया था। फिर अगस्त 1910 में डेनमार्क के कोपेनहेगन में सोशलिस्ट सेकेंड इंटरनेशनल की जनरल मीटिंग से पहले इंटरनेशनल सोशलिस्ट वुमेंस कांफ्रेंस हुई थी जिसमें हर साल 'महिला दिवस' मनाने का प्रस्ताव आया था। अगले साल 1911 में 19 मार्च को आस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी व स्विट्जरलैंड में दस लाख से ज्यादा महिलाओं ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। पूरे यूरोप में महिलाओं ने वोट देने और सार्वजनिक पदों पर बैठने का अधिकार मांगा और लैंगिक भेदभाव का विरोध किया।

शुरू में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की कोई तय तारीख

नहीं थी और वह फरवरी के अंत में या मार्च के शुरू में मनाया जाता था। अमेरिका में फरवरी के आखिरी रविवार को नेशनल वुमेंस डे मनाया जाता रहा। रूस ने पहली बार 1913 में जूलियन कैलेंडर के हिसाब से फरवरी के आखिरी शनिवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया (ग्रेगोरियन कैलेंडर के हिसाब से उस रोज 8 मार्च थी)। 1914 में जर्मनी में 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया, शायद इसलिए कि उस दिन रविवार था। 1917 में अक्टूबर क्रांति के बाद सोवियत संघ ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को सरकारी छुट्टी घोषित कर दिया। चीन में 1 अक्टूबर 1949 को पीपुल्स रिपब्लिक की स्थापना के बाद 8 मार्च को महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं को आधे दिन का अवकाश दिया जाने लगा। संयुक्त राष्ट्र ने 1975 से महिला दिवस मनाना शुरू किया। वह साल अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया जा रहा था। 1977 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सभी सदस्य देशों से 8 मार्च को महिला अधिकारों के लिए आधिकारिक संयुक्त राष्ट्र अवकाश के रूप में मनाने का

आह्वान किया। तब से हर साल संयुक् राष्ट्र महिला धिकारों क मुद्दे पर एक नई थीम के साथ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाता आ रहा है। महिलाएं समाज की शिल्पकार होती हैं। मैं चाहती हं कि हर बच्ची यब महसूस करे कि उसकी आवाज दुनिया को बदल सकती है। कोई फर्क नहीं पड़ता अगर थोड़ा वक्त लगे लेकिन हम बिना डरे और हंसते हुए हर जिम्मेदारी को निभा सकते हैं।

10वीं, एसडीआर रेनबो होम, बैंगलोर

देवी,

Celebrating, Women's rights,

LLP, ARUN Rainbow Home,

Children performing on Women's Day, ARUN

Rainbow Home, Hyderabad

Rainbow program

team remains in

touch with kids who

are supported with

comprehensive care

but in new situation

they live with their

families and the

family offer shelter

security and

emotional security.

রেইনবো সাখী

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

CH S



# PARENTS ARE ALWAYS THE KEY STAKEHOLDERS

Rainbow Homes children have a very different family background. Some of them have no functional families while many of them have their families living on the streets, without any roof for shelter or security of food. They have no provision for health as well. Obviously, in such a set-up the parents or the guardians are quite anxious about well-being of their kids. They are never sure, what happens when they go for any work or in search of a livelihood leaving behind kids on the streets.

This is one of the most important fear for all such families and especially for the single mothers. Hence they always engage by being around and trying to

protect their kids. We all have seen incidences of families going for begging in the group or parents engaging kids in labour along with them at tender age. The reason is concern of safety of kids left behind.

Issue is bigger

We have now started a new program on community-based care. This helps all the stakeholders in integrating with each other and accepting each other to keep such transformations smooth.

with single women, many of whom have themselves faced high degree of domestic violence and increased level of insecurity. They are in constant threat to their lives and those of their kids. Since they are already on run from either their homes, husbands or so-called families, they don't have any safe home for themselves and thus they end up on streets. Once on streets with the kids, their lives revolve around giving protection to their children.

I can recall a story of a woman from Odisha. She kept moving along with her two kids from once city to another. She went to Chennai, to Kolkata, Mumbai, Indore and finally reached Delhi. She kept doing different types of works. But it was very tough for her to take care of her kids. That feeling of insecurity always remained there in back of her mind. In the meantime, she lost one of her children. Now left with just one child, she came to Hyderabad. All these years, despite being homeless, she has fought for

At Hyderabad, she put her child in a Rainbow Home and started living in a shelter home. Feeling bit relaxed about her child's

her life and the lives of her children.

security, withing six months she started working. She already had an experience of being homeless for almost 8-9 years. In Hyderabad, she started with an experimental

livelihood for 2-3 years and then settled down on one.

Now, with 5-6 years passed one, she has completely transformed her life. From living on streets, she has moved to a rented house in LIG society. Confidence grew in her and she was even ready to take care of her child. Meanwhile, all these six years the kid lived at Rainbow Home, started studies and was completely integrated into mainstream

schooling. She was aware of all opportunities to grow, that were coming her way. She is a good student. Lives of both mother and daughter had changed all these years and

therefore mother wanted her back in her life.

During the times of the COVID pandemic, the daughter also started thinking that my mother would be all alone and I should take care of her. As both of them wanted to stay together, the way it went. They started living together in mother's rented place.

I visited them recently about two months back and I could sense a beautiful little family, enjoying and taking care of each other. Girl is continuing with her studies. I saw in photos them having fun, celebrating birthdays together, like every other family. I then realized that despite being homeless, she was a mother first and for her care of her child was the top priority. So, we can never undermine this bond between a child and its family.

Every year normally we restore 10 to





RAINBOW SATHI

ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साथी

SATHI

15 children back with their families. It takes some time for them to reintegrate with the community. We have now started a new program on community-based care. This helps all the stakeholders in integrating with each other and accepting each other to keep such transformations smooth.

The average time a child spends in care of Rainbow home is 7 years. When we take care of these children for about 6 to 7 years, then I am sure that families also get a breathing space because of their extreme poverty. They get more chance to earn normal minimum livelihood. Though, no livelihood can be guaranteed at this time but at least they can put an effort to go regularly to their jobs without any feeling of insecurity of their child behind them.

Now, all those parents who have grown a bit and improved their status, and are prepared to receive their child back with the confidence- we are now reintegrating kids with their families and parents. Most of our children have single parents and mainly single mothers and few single fathers as well. Families with both parents are but very rare. We are also trying to support these families through Rainbow Homes program.

Rainbow program team remains in touch with kids who are supported with comprehensive care but in new situation they live with their families and the family offer shelter security and emotional security. Whereas Rainbow Homes program keeps supporting them with additional nutrition, education, continuing their life skills trainings and education, livelihood focus and livelihood exposure until the child gets into mainstream livelihood. Until it has a true access to the decent life.

We always perceive the role of parents as of one of the key stakeholders and that plays a big role in bringing up the child and building a contributing citizen.

> K. Anuradha, Executive Director **Rainbow Homes Program**



भबो होम के बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि एकदम अलग तरह की रही है। इनमें से कुछ के पास तो परिवार कहे जाने लायक ही कोई नहीं होता तो कई ऐसे होते हैं जिनके परिवार सड़कों पर रहते हैं, जिनके सिरों पर न छत का आसरा होता है और न ही खाने-पीने का कोई बंदोबस्त। सेहत की देखरेख की तो बात ही क्या। जाहिर है कि ऐसे सारे माहौल में ये तमाम परिवार अपने बच्चों की बेहतरी को लेकर काफी चिंतित रहते हैं। उन्हें हमेशा यह डर सताता रहता है कि जब वह किसी काम पर या किसी काम की तलाश में कहीं जाएंगे तो पीछे से सडकों पर उनके बच्चों की हिफाजत कौन करेगा।

ऐसे सारे परिवारों के लिए यह एक सबसे बड़ा भय होता है, खास तौर पर अकेली माओं के लिए। इसीलिए वे हमेशा कोशिश में रहती हैं कि आसपास ही रहें और बच्चों का ध्यान रखें। हमने अक्सर ऐसी घटनाएं देखी हैं जब पूरे के पूरे परिवार भीख मांगने निकल पडते हैं या फिर माता-पिता बच्चों को भी अपने ही साथ मजदूरी के काम में लगा लेते हैं। इसमें सबसे बड़ी चिंता पीछे बच्चों को चोड़ने पर उनकी सरक्षा की होती है।

मसला अकेली माओं के लिए ज्यादा गंभीर होता है जिनमें से ज्यादातर ने खुद जमकर घरेलु हिंसा और खासा असुरक्षित जीवन झेला होता है। वे निरंतर अपने जीवन के साथ-साथ अपने बच्चों के जीवन के लिए भी खतरे के माहौल में रह रही होती हैं। चूंकि वे पहले ही अपने घरों, पतियों या कथित परिवारों से भागी फिर रही होती हैं इसलिए उनके पास खुद के लिए कोई सुरक्षित ठौर-ठिकाना नहीं होता, लिहाजा वे सड़कों पर जीवन गुजार रही होती हैं। जब वे अपनी संतानों के साथ सड़कों पर होती हैं तो

उनका जीवन बच्चों को हिफाजत से रखने के इर्द-गिर्द ही घूमता रहता है।

मुझे ओडिशा की एक महिला की कहानी याद आ रही है। वह अपने दो बच्चों के साथ एक शहर से दूसरे शहर घुमती रही। वह चेन्नई गई, कोलकाता, मुंबई, इंदौर और फिर अंत में दिल्ली पहुंची। वह कई तरह के काम करती रही। लेकिन उसके लिए बच्चों की देखरेख करा बहुत मुश्किल हो रहा था। बच्चों को लेकर असुरक्षा का भाव हमेशा उसके जेहन में चलता रहता था। इस दौरान उसने अपनी एक संतान को खो दिया। फिर एक बच्ची के साथ वह हैदराबाद आ गई। इतने सालों तक वह बेघर होने के बावजूद अपनी

जिंदगी के लिए और अपनी बच्चों की जिंदगी के लिए लड़ती रही। हैदराबाद आकर, उसने अपनी बच्ची को रेनबो होम में डाला और खुद एक शेल्टर होम में रहने लगी। वह अपनी बच्ची की सुरक्षा को लेकर थोड़ी निश्चिंत हुई तो छह महीने के भीतर उसने काम करना शुरू कर दिया। पिछले आठ-नौ सालों से तो वह बेघर की तरह रह ही रही थी। हैदराबाद में दो-तीन साल तो उसने अलग-अलग तरह के काम किए और फिर वह एक काम पर टिक गई।

5-6 साल बीतने के बाद उसकी जिंदगी में पूरी तरह से बदलाव

आ गया। सडकों पर रहते-रहते वह एलआईजी सोसायटी में किराये के मकान में पहुंच गई। उनका आत्मविश्वास बढा और वह यहां तक कि अपनी बच्ची की देखरेख करने को भी तैयार थी। इन छह सालों के दौरान उनकी बच्ची रेनबो होम में रही, उसने पढ़ाई शुरू की और धीरे-धीरे वह स्कूली शिक्षा की मुख्यधारा में आ गई। उसे इस बात का अहसास था कि उसे आगे बढ़ने के कैसे अवसर मिल रहे हैं। वह अच्छी छात्र है। इन सालों में मां-बेटी, दोनों की जिंदिगयां बदल गईं और इसलिए मां अब फिर से बेटी को अपने साथ रखना चाहती थी।

कोविड महामारी के दौरान बेटी ने भी सोचा कि मां अकेले होगी और उसे उनके साथ रहकर उनकी देखरेख करनी चाहिए। चूंकि वे दोनों ही साथ रहना चाहते थे इसलिए वे मां के किराये के मकान में साथ रहने लगे।

करीब दो महीने पहले मैं उनसे मिलने गई थी और दोनों एक छोटे से खुबसूरत परिवार की तरह रह रहे थे- एक दूसरे से खुश रहते हुए और एक-दूसरे का ख्याल रखते हुए। मैंने उनकी साथ मस्ती करते, जन्मदिन मनाते फोटो देखीं, एक सामान्य परिवार की तरह। तब मुझे अहसास हुआ कि बेघर थी तब भी वह मां पहले थी। उसके लिए बेटी की हिफाजत सबसे बडी चिंता थी। इसलिए एक बच्चे व उसके परिवार के बीच के रिश्ते को हम कभी कमतर नहीं मान सकते।

हर साल सामान्यतया हम 10-15 बच्चों को उनके परिवारों के साथ फिर से जोड़ते हैं। उन्हें यहां से निकलकर वहां तालमेल बनाने में वक्त लगता है। हमने अब समुदाय-आधारित देखरेख का एक नया प्रोग्राम भी शुरू किया है। इससे इन सभी को इस बदलाव के साथ तालमेल बैठाने में

एक बच्चा औसतन 6-7 साल रेनबो होम में बिताता है। इन सालों के दौरान उनके परिवारों को भी उनकी गरीबी की स्थिति में थोडी मदद मिल जाती है। एक बच्चे की जिम्मेदारी से वे मुक्त हो जाते हैं तो उनके पास अपने भरण-पोषण के लिए थोड़े ज्यादा संसाधन रहते हैं। इस दौर में रोजगार की कोई गारंटी तो नहीं मिल सकती लेकिन वे पीछे बच्चं की चिंता

> किए बगैर अपने काम पर या काम की तलाश में जा सकते हैं।

अब जो भी माता-पिता अपनी स्थिति थोड़ी सुधार लेते हैं और उन्हें थोड़ा भरोसा हासिल हो जाता है, वे बच्चों को साथ रखने को तैयार हो जाते हैं। हम उन बच्चों को फिर से परिवारों से मिलाते हैं। हमारी कोशिश यह भी रहती है कि हम रेनबो होम प्रोग्राम की तरफ से इन परिवारों की मदद करते रहें।

रेनबो होम की टीम परिवार के पास लौटे बच्चों के भी निरंतर संपर्क में रहती है। उन्हें आसरा व भावनात्मक सुरक्षा तो परिवार से मिलती है लेकिन साथ ही हम रेनबो होम प्रोग्राम के जरिये उन्हें अतिरिक्त पोषण, शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के प्रति फोकस भी उपलब्ध कराते हैं जब तक कि एक अच्छे

जीवन का लक्ष्य वे हासिल नहीं कर लेते।

हम हमेशा मानते हैं कि हमारे प्रोग्रामम में माता-पिता व अभिभावक एक प्रमुख हितधारक हैं और बच्चों को बढ़ा करने और जिम्मेदार नागरिक बनाने में उनकी अहम भूमिका रहती है।

के. अनुराधा, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर



RAINBOW SATHI



रेनबो होम की टीम परिवार के

पास लौटे बच्चों के भी निरंतर

संपर्क में रहती है। उन्हें आसरा

व भावनात्मक सुरक्षा तो परिवार

से मिलती है लेकिन साथ ही हम

रेनबो होम प्रोग्राम के जरिये उन्हें

अतिरिक्त पोषण, शिक्षा, कौशल

प्रशिक्षण और रोजगार के प्रति

फोकस भी उपलब्ध कराते हैं

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI •

रेनबो साथी SATHI RAINBOW

#### PARENTS SPEAK - PATNA

# I Get Strength When My Daughters Come Home

am 40 years old. I work as a garbage picker and take care of Imy children and the house with the money that I earn. Once when I was collecting the garbage along with my kids, then I met Manju Didi at Kurkuri village. Didi inquired about the children and asked me why I was not sending them to study and instead putting them in collecting the garbage. Didi told me about Rainbow Home, she was attached to it. She said that I

> could put my children there. There kids will get both- education and protection. They would not be facing any problem.

It has been 9 years since then and I love seeing my kids. I have put my two daughters in Rainbow Home. I am happy to watch my daughters study, dance, learn music and sing a song. Whenever daughters come home, I get a lot of courage. They tell me that if there is any problem then I should call on women helpline no 181. When the daughters come home, the people of the community say very well. They also tell the girls in the neighborhood to study. However, sometimes people around will comment that I am enjoying after putting my



# बेटियां घर आती हैं तो मुझे हिम्मत मिलती है

में री उम्र 40 साल है। मैं कचड़ा बीनने का काम करती हूं और उसी पैसे से अपने बच्चों और घर की देखभाल करती रही हूं। मैं अपने बच्चों के साथ कुडा उठाती थी तभी मेरी मुलाकात कुरकुरी ग्राम में मंजू दीदी से हुई थी। दीदी ने मुझसे बच्चों के बारे में पूछा और मुझे कहा कि क्यों मैं अपने बच्चों को पढाई-लिखाई न करवा कर उनसे कडा बीनने का काम करवाती हं। तब दीदी ने रेनबो होम के बारे में बताया थी। वह उससे जुड़ी थीं। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अपने बच्चों को वहां रख सकती हूं। वहां बच्चों को शिक्षा और सरक्षा दोनों मिलेंगे। उन्हें किसी चीज की दिक्कत नहीं होगी।

इस बात को नौ साल हो गए हैं और मुझे अब अपने बच्चों को देखकर बहुत अच्छा लगता है। मैंने अपनी दो बेटियों को रेनबो होम में डाला है। मुझे अपनी बेटियों को पढ़ाई-लिखाई, डांस करते देख, संगीत सीखते देख बहुत अच्छा लगता है। जब भी बेटियां घर आती हैं तो मुझे बहुत हिम्मत मिलती है। वह मुझे बताती हैं कि अगर कोई समस्या हो तो महिला हेल्पलाइन नंबर 181 पर कॉल करना। बेटियां जब घर आती हैं तो समुदाय के लोग बहुत अच्छा कहते हैं। उनको देखकर आस-पडोस

की बच्चियों भी पढाई करने के लिए बोलती हैं। अभी तो कभी-कभी आस-पास के लोगों के ताने सुनने पडते हैं कि बेटियों को हॉस्टल में डाल कर ख़ुद आराम से रहती है। रेनबो होम में रहते हुए बच्चों को कोई समस्या, परेशानी नही है। बच्चियां होम में अच्छे से रह रही हैं। रेनबो होम से जुड़ने से पहले मुझे बहुत मुश्किलें रहती थीं। लेकिन जब से मैं रेनबो होम से जुड़ी हूं, मेरी काफी परेशानियां दूर हो गई हैं। बस अब बेटी कुछ बन जाए और काम करने लगे तो मैं निश्चिंत हो जाऊंगी।

चंपा कुमारी व आशा कुमारी (कक्षा 11वीं, उम्र 17 साल) की मां, घरौंदा विकासार्थ रेनबो होम, पटना

daughters in the hostel.

While living in Rainbow Home, children do not face any problem. The girls are living well. I had a hard time earlier. But since then, many of my problems have gone away. Now there is only one wish that if the daughter becomes something and starts working, then I will be relieved.

> Pataliya Devi, Mother of Champa Kumari and Asha Kumari (Class 11th, 17 years), Gharaunda Vikasarth Rainbow Home, Patna

# हर मुश्किल से लड़ने का आत्मविश्वास आया

में री उम्र 30 वर्ष है। मैं दो जगह काम करती हूं- पहला सुबह 7 बजे से 9 बजे और शाम को 6 बजे से 7 बजे तक में एक घर में खाना बनाती हूं और दूसरी जगह में एक ऑफिस में चाय-पानी देने का काम करती हूं। दो जगह काम करके ही मैं अपना घर चला पाती हूँ। अपने बच्चों का पालन-पोषण करती हूं। काजल और सीमा बचपन से ही मेरे साथ रही है। बचपन मे ही इनकी मां



गुज़र गई थी और बाप का साया उन पर नहीं रहा था। इस वजह से इन दोनों का लालन-पालन मैंने ही किया। जब रेनबो होम की टीम से नील मैडम हमारे मोहल्ले में आई, और काजल व सीमा को ले जाने की बात कही तो मैंने उनकी बात को अनुसूना कर दिया था। क्योंकि, एक अजनबी के साथ बच्चों को भेजने की बात मुझे उचित नहीं लगी। लेकिन जब उन्होंने रेनबो के बारे में विस्तार से बताया और अपना परिचय अच्छे से कराया, और फिर मैंने उनके साथ रेनबो होम में जा कर अपनी आंखों से देखा तब लगा कि बच्चे वहां सुरक्षित रहेंगे। तब बच्चों का नाम सर्वे में लिख कर होम आई तभी से रेनबो होम से रिश्ता बना।

काजल और सीमा 2013 से रेनबो होम में रह रही हैं। उन्हें तकरीबन 10 साल हो जाएंगे वहां रहते। बच्चे जब घर में रहते थे तो हमारी सामाजिक स्थिति



रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

#### **PARENTS SPEAK - PATNA**

ठीक नहीं थी। जब मैं काम पर जाती थी तो उनका पूरा ख्याल नहीं रख पाती थी। बच्चों की चिंता लगी रहती थी। लेकिन जब वे रेनबो होम में गईं तो हालात बदले। बच्चे समझदार हुए। उनके व्यवहार में बदलाव दिखा। पढ़ाई, जीने के सलीके, जिम्मेदारियाँ, सही गलत बात को समझने लगे। सब से बडी बात, उनमें आत्मविश्वास आया कि परिस्थितियां कैसी भी हों, उनको अपना भविष्य चमकाना है और अपना भविष्य बनाना है । मैं भी उनके इस फैसले से काफी सहमत और सन्तुष्ट हूँ। मैं नही चाहती कि जिस तरह मैं दूसरो के घरों में काम करती हूं वे भी यही करें। इसलिए मैं उनकी पढ़ाई में उन्हें आगे बढ़ाने में उनके साथ हं।

आमतौर पर छोटी-मोटी समस्या का हल वे आपस में ही निकाल लेती हैं। अगर बात बड़ी होती है तो मुझे बताती हैं, फिर हम रेनबो होम टीम के साथ मिल कर समस्या का समाधान निकालते हैं।

काजल व सीमा की अभिभावक, रेनबो होम, पटना

Got confidence to tackle every obstacle

Tam 30 years old. I work at two places- in a house **▲** from 7 to 9 in the morning and in the 6 to 7 in evening, where I cook food. And, at another place I work to provide tea-coffee in an office. Thus, I run home and I take care of my children.

Kajal and Seema have been with me since childhood. Their mother had passed away in their childhood and father was also no more. Then, I took care of both of them. When Neelu Madam

from Rainbow Home team came to our locality and talked about taking Kajal and Seema away to Rainbow Home, I ignored them. I felt a bit awkward in sending kids with a stranger. I didn't feel right. But when she

explained in detail about Rainbow Home, introduced herself well. And at the same time, I went to the Rainbow Home with her and saw with my own eyes that the children were safe and happy. Then I came home after registering the names of the children in the survey, since then my association with Rainbow home started.

Kajal and Seema have been living in Rainbow Home since 2013, now that will be almost 10 years. When children were with me our economic status was not that good. When I would go for work, I will not be able take full care of them. I remained worried about them.

But when they went to the Rainbow Home, conditions changed. The kids got smarter. There was a change in their behavior. They were good in studies, learned to live responsibly,

differentiate between right and wrong. Above all, they got confidence in handling things, no matter what the circumstances may be. They knew, they had to shine their future. I am very much satisfied and supportive of their decision. I don't wish them to work in other peoples' homes as I do. I am with them in pursuing their studies.

Usually, they find out the solution of small problems among themselves. If things get tough, they let me know and then we work with the Rainbow Home team to solve the problem.

Poonam Devi, guardian of Kajal and Seema, Rainbow Home, Patna

# व्यवहार में आया सकारात्मक बदलाव

री उम्र 41 साल है। मैं मकान बनाने में ढलाई के समय मज़द्री का काम करती हूं। रेनबो होम के बारे में मुझे होम के ही एक बच्चे कन्हैया के माता पिता के माध्यम से पता चला था। कन्हैया की माँ ने ही मुझे रेनबो होम में संपर्क करने के लिए बोला था। उन्हीं ने मुझे रेनबो होम के बारे में विस्तृत रूप में सब बताया था कि वहां बच्चों पर बहुत अच्छी तरह ध्यान दिया जाता है। पढाई करवाने के भी तरीके बहुत अलग हैं। तरह-तरह की गतिविधियां कराई जाती हैं और अधिकारों से भी परिचित कराया जाता है। वहां बच्चे की ज़रूरत को पूरा किया जाता है और सभी बच्चों को हिफाजत और प्यार से रखा जाता है। यह सब जानकर मैंने भी तय किया कि मैं भी अपनी बच्ची को रेनबो होम में भेजुंगी ताकि वह भी चीज़ों को समझे और सीखे। तब तक मेरे बच्चे मेरे साथ कचरा बीनने का काम करते थे।

प्रियंका को अब होम में रहते हुए तीन साल हो चुके हैं। रेनबो होम में आने के बाद से मुझे प्रियंका में बहुत सारे



बदलाव देखने को मिल रहे हैं। जैसे वह पहले बहुत शर्माती थी, अब कम हो गया है। अब वह साफ-सफाई से रहती है। स्पष्ट बोलती है और परिवार के प्रति उसका व्यवहार अच्छा रहता है। किसी से अपशब्द नहीं बोलती। मेरी अनुमति के बिना कोई अपरिचित काम करने के लिए तैयार नहीं होती। जब वह त्योहार पर घर आती है तो अपने भाई-बहनों का बहुत ध्यान रखती है। पढ़ाई-लिखाई में ध्यान देने की अभी उसे और ज़रूरत है।

मैं अपने बच्चों की सभी समस्याओं का गहराई से आंकलन करती हुं और उसके बाद उस समस्या का समाधान निकालने के लिए अपने पित और रेनबो होम की टीम से सलाह और मदद मांगती हूं। उसी के अनुसार समस्याओं का हल निकालने की कोशिश करती हं। वैसे अभी

मेरे सामने ज्यादा चिंता करने वाली समस्या नहीं आई है। बस अभी एक समस्या है उसके स्वास्थ्य को लेकर, जिसका इलाज भी कराया जा रहा है। कुछ महीने दवाई खाने के बाद वह ठीक हो जाएगी।

बेबी देवी, प्रियंका की मां, रेनबो होम, पटना

# A positive change in behaviour

Tam 41 years old. I work as a laborer in house Lonstruction. I came to know about Rainbow Home through the parents of a Rainbow Home child Kanhaiya. It was Kanhaiya's mother who told me to contact Rainbow Home. She told me everything in detail. There the children are taken care of very well. The methods of education are also very different. Various activities are conducted and children are also told about their rights. The child's needs are met and all children are kept safely and lovingly. Then I also decided to send my daughter to Rainbow Home, so that, she could understand and learn things. Till then, all my children used to work as garbage pickers.

Now it has been three years since Priyanka is at Rainbow Home. I am seeing a lot of changes in Priyanka since she came at Rainbow Home. Earlier, she used to be very shy, but now it has reduced. She is more into cleanliness and hygiene. She speaks clearly and has good behavior towards family. She does not speak abusive words to anyone. When she comes home for festivals, she takes great care of her siblings. There is still a need for her to pay attention to her studies.

I do an in-depth assessment of my children's every problem and then seek advice and help from my husband and Rainbow Home team to solve the problem at that time. Accordingly, I try to solve the problems. I haven't faced much worrying problem so far. There is just a problem regarding her health, which is also being properly treated. After taking the medicines for a few months, she will be normal again.

Baby Devi,

Mother of Priyanka, Rainbow Home, Patna

RAINBOW SATHI ● रेजबो साथी ● ठि००र्कि रेजके ● जिल्लामाओं उपा मार्चे की ● र्रुं रुक्त कि • (त्रेहेन(रा प्रारी









ரெயின்போ சாத்தி

ক ক

రెయిన్బో

रेनबो साथी

SATHI

RAINBOW





ரெயின்போ சாத்தி

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI



received on new year.



nauguration of a learning center at Rainbow Home in Ranchi

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठेळार्रिय केंक् ● जिल्लाकार्विण मार्क्षे ● क्रिक्थ कि ● द्विरेनदा प्रार्थी

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय रोज्दे ● निज्ञाधीलंडिया मार्केकी ● न्रैर्ज्यंक रूक् ● (त्रहेन(ता प्राणी

### **PARENTS SPEAK - HYDERABAD**



(ब्रश्नेवादा माथी

ರೈನ್ಬ್ಯೋ ಸಾಥಿ

ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

# **CARE** AND COMMITMENT IMPRESSED ME

#### **INTERVIEWER**

N. Anjali, 10th class, ARUN rainbow home, Lalapet, Hyderabad

Tam 35 years old. My daughter is living in ■ Rainbow Home for about 7 years now. I have two daughters and a son. I had admitted my child at LSN Foundation. One of the faculty of LSN foundation told me about ARUN Rainbow home. He said it is in Lalapet. He told that they take care of children very nicely, education is also good, cultural activities are held, they send children to schools, take children to different events and programme, sports are also organized. After listening all this thing from him, I decided to send Vaishnavi here.

There are many such organizations, but I knew about Rainbow Home. I heard a lot about them and their care. Initially, I was afraid whether will she adjust, how she will study, will she mix in the environment. I was worried about all these things and bit scared too.

Now after coming to Home, she has become very active. She is good in studies and also participates in cultural activities. I never thought of taking her back with me because she likes to be here, she wants to



#### achieve something in life. And it is safe for her to stay at the Rainbow Home.

We are also glad Rainbow Home programme has given us massive support. In the time of COVID, we had money problems, we did not have food to eat. Rainbow Home helped us to get out of this situation.

I feel sad as she doesn't come home very often, and I want to celebrate and spend time with her on the festivals. But then, we don't celebrate every festival at home whereas, Rainbow Home celebrates every festival so its better that way.

J. Saritha, Mother of J. Vaishnavi

### यहां की देखभाल की बात ही अलग है

#### साक्षात्कार

**एन. अंजलि,** 10वीं, अरुण रेनबो होम, लालापेट, हैदराबाद

मेरी उम्र 35 साल है। मेरी बेटी लगभग 7 साल से रेनबो होम में रह रही है। मेरी दो बेटियां और एक बेटा है। मैंने अपने एक बच्चे को एलएसएन फाउंडेशन में भर्ती कराया था। वहीं, एलएसएन फाउंडेशन के एक अध्यापक ने मुझे लालापेट में अरुण रेनबो होम के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि वहां बच्चों की बहुत अच्छी तरह से देखभाल होती है, पढ़ाई अच्छी है, सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती हैं, बच्चों को स्कूल भेजा जाता है, विभिन्न कार्यक्रमों में ले जाया जाता है, खेल भी खिलाये जाते हैं। उनकी यह सब बातें सुनने के बाद मैंने वैष्णवी को रेनबो होम में रहने का फैसला किया।

जगहें तो और भी थीं, लेकिन मैंने रेनबो होम के बारे में इतना सुन लिया था और जान लिया था कि यहां किस तरह से देखभाल होती है, इसलिए मैंने बेटी को यहीं भेजने का फैसला किया। पहले तो मुझे डर था कि वहां रुकेगी या नहीं, कैसे पढ़ेगी, वहां के माहौल में एडजस्ट करेगी या नहीं। मुझे इस सब की चिंता थी और डर भी।

अब होम में आने के बाद वह काफी सिक्रय हो गई है। वह अच्छे से पढाई करती है और साथ ही अन्य गतिविधियों में बहुत अच्छी तरह से बढ़चढ़ कर भाग लेती है। इसिलए मैंने कभी उसे घर से दूर ले जाने के बारे में नहीं सोचा क्योंकि उसे यहां रहना पसंद है, वह जीवन में कुछ हासिल करना चाहती है, और रेनबो होम में वह सुरक्षित है।

हमें इस बात की भी खुशी है कि रेनबो होम से हमें बहुत मदद मिली। कोविड के समय में हमें पैसों की दिक्कत थी, हमारे पास खाने के लिए खाना नहीं था, तब रेनबो होम ने हमें इस मुश्किल से बाहर निकलने में मदद दी। वह घर ज्यादा नहीं आ पाती, खासकर के त्योहारों पर तो इसका दुख तो होता है क्योंकि मैं उसके साथ त्योहार मनाना चाहती हूं और उसके साथ समय बिताना चाहती हूं। लेकिन फिर हम हर त्योहार घर पर मनाते भी तो नहीं हैं। रेनबो होम तो हर त्योहार मनाता हैं इसलिए यह भी एक तरह से उसके लिए अच्छा ही है।

जे. सरिता, जे. वैष्णवी की मां

## Now my kids like to study

INTERVIEWER: Archana, 10th class, RFI home, Falaknuma, Hyderabad

Tam 30 years old. I used to work as maid **L**in other houses. I have two children. I got information about Rainbow Home from one of my friends. When children were staying with me, then it was very difficult for me to go out and do work. I always kept thinking about my children, and due to this I would do some mistakes and the house lady will shout on me. These days the situation is extremely dangerous, you cannot leave your children alone at home.

Now my children are in Rainbow Home for last four years. Since then, I have observed so many changes in my children. When they were with me, they didn't like to study but after coming to Rainbow Home they go to school regularly. Now, I am quite happy for my children.

We also got support from Rainbow Home during COVID pandemic, I got ration from RFI team.

Anuradha, Parent

## मेरे बच्चों को पढ़ाई पसंद आने लगी

साक्षात्कारः अर्चना, 10वीं, आरएफआई होम, फलकनुमा, हैदराबाद

🐴 30 साल की हूं और दूसरे घरों में काम करके मुखर्च चलाती हूं। मेरे दो बच्चे हैं। मुझे अपने एक दोस्त से रेनबो होम के बारे में पता चला। जब बच्चे मेरे साथ रहते थे तो मेरे लिए बाहर जाकर काम करना बड़ा मुश्किल होता था। हमेशा बच्चों की चिंता लगी रहती थी तो काम में भी गड़बड़ हो जाती थी और

उसके चक्कर में डांट भी सुननी पडती थी। आज के माहौल में पीछे घर पर बच्चों को अकेला छोडना कितना खतरनाक है।

अब मेरे बच्चे पिछले चार साल से रेनबो होम में हैं। उसके बाद



से मुझे उनमें काफी बदलाव देखने को मिले हैं। जब वे मेरे पास थे तो उनका पढने में मन नहीं लगता था, लेकिन अब वे नियमित रूप से स्कल जाते हैं। मुझे अपने बच्चों को लेकर अब काफी

हमें तो कोविड महामारी के दौरान भी रेनबो होम से काफी मदद मिली। मुश्किल स्थिति में हमें राशन उपलब्ध कराया गया।

अनराधा, अभिभावक



RAINBOW SATHI

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिయर्रिध रेन्क़ ● जिल्लाकंटिया मार्क्के ● कुरुध्वर रूक् ● (त्रदेनत्वा प्रार्थी

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठेळार्रिध केंद्रे ● जिज्ञाधीलिया मार्क्रेक्री ● ठुर्ज्यक कि ● (त्रहेन(वा प्रार्थी

#### **PARENTS SPEAK - HYDERABAD**

# **NOW I CAN WORK WITHOUT** ANY **TENSION**

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬೋ ಸಾಥಿ

ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साधी

SATHI

**Interviewer: Bushra Fatima, 9th class,** RFI home, Falaknuma, Hyderabad

Tam 30 years old. I have five children. I **⊥** work in a hospital. I got information about Rainbow Home from my friend. When children stayed with me then it was not possible for me to go out and to do any work because there was no other person to take care of them. Now a days the situation is not good to leave children alone at home. Now, since three years my children are staying at the Rainbow Home.

But, now I am feeling good because I can go to my work without any tension. I don't have to worry about my children because at

Rainbow Home they are safe and they are studying properly. Staff here puts too much concern in care of children.



I have observed so

many changes in my children after coming at Rainbow Home. When they were with me they would not go to school. But after coming to Rainbow Home, they are regular in studies. I want my daughter to join police after studies.

During pandemic situation, I got support in form of ration from Rainbow Home.

**Manisha**, Parent



## बिना किसी चिंता अब मैं काम पर जा सकती हूं

साक्षात्कारः बुशरा फातिमा, १वीं, आरएफआई होम, फलकन्मा, हैदराबाद

भे30 साल की हूं। मेरे पांच बच्चे हैं। मैं एक अस्पताल में काम करती हूं। मुझे अपने एक दोस्त से रेनबो होम के बारे में पता चला था। जब बच्चे मेरे पास थे तो मेरे लिए बाहर जाकर काम करना बडा मुश्किल होता था क्योंकि पीछे बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता था। इन दिनों ऐसे हालात नहीं हैं कि बच्चों को अकेले घर पर छोड़ा जा सके। अब, पिछले तीन साल से मेरे बच्चे रेनबो होम में हैं।

लेकिन अब मुझे अच्छा लगता है क्योंकि मैं बगैर किसी तनाव के काम पर जा सकती हूं. मुझे बच्चों की चिंता नहीं करनी पड़ती क्योंकि वे रेनबो होम में सुरक्षित हैं और अच्छे से पढाई कर रहे हैं। यहां का स्टाफ भी बच्चों की देखभाल की चिंता करता है।

रेनबो होम में आने के बाद से बच्चों में काफी बदलाव देखने को मिले हैं। जब वे मेरे पास थे तो वे स्कूल नहीं जाते थे। लेकिन रेनबो होम में आने के बाद से वे नियमित रूप से पढाई करने लगे हैं। मेरा मन है कि मेरी बेटी पढ़ाई के बाद पुलिस में भर्ती हो जाए। कोविड महामारी के दौरान मुझे भी राशन के रूप में रेनबो होम से मदद मिली।

मनीषा, अभिभावक

# Children are happy and enjoying studies

Interviewer: Swapna Mourya, 8th class, RFI Home, Falaknuma, Hyderabad

Tam 35 years old. I have Lsix children. In have total 10 members in the family. I earn by selling seasonal fruits. I came to know about Rainbow Home from my family friend. He told me that if I send my children to Rainbow Home then they will get proper education and their future will be safe.

When children were

# बच्चे खुश हैं, उन्हें पढ़ाई में भी मना आ रहा है

साक्षात्कार: स्वप्ना मौर्य, 8वीं, आरएफआई होम, फलकनुमा, हैदराबाद

35 साल की हूं और मेरी छह संतानें हैं। वैसे मेरे परिवार में कुल 10 सदस्य हैं। मैं घर चलाने <mark>के</mark> लिए मौसमी फल बेचती हूँ। मुझे अपने एक पारिवारिक मित्र से रेनबो होम के बारे में पता चला था। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर हम अपने बच्चों को वहां भेजेंगे तो उन्हें अच्छी शिक्षा मिलेगी और उनका भविष्य सुरक्षित हो

जब बच्चे मेरे साथ होते थे तो मेरे लिए बाहर जाना और काम करना संभव नहीं होता था। मैं हमेशा अपने बच्चों के बारे में सोचती रहती थी। इन दिनों अभिभावक के बिना बच्चे सुरक्षित नहीं हैं। अब, पिछले आठ साल से मेरे बच्चे रेनबो होम में हैं। बच्चे हिफाजत से हैं तो मेरे लिए भी काम पर जाना आसान होता है।

यहां आने के बाद से मैंने अपने बच्चों में काफी बदलाव देखे हैं। वह अब ख़ुश रहते हैं और पढ़ाई करते हैं। मुझे उनको लेकर बहुत

कोविड महामारी के दौरान लगे लॉकडाउन के वक्त भी मुझे रेनबो होम से मदद मिली।

बबीता, अभिभावक

staying along with me, then it would not be possible for me to go out and to do work as I always keep thinking about my children. These days children are not safe without guardian. Now, for 8 years my child are

staying at the Rainbow Home. It is easy for me to go to work because my children are at the Rainbow Home.

I have observed so many changes in my children. They are happy and enjoying studies. I am quite happy for my children.

I also got support from Rainbow Home during the lockdown because of COVID pandemic.



Babita, Parent

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय रोजि ● निज्ञाणिलिया मार्केकी ● नैज्ञालिक रूकि ● (त्रेरेनिया पार्थी

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठेळार्रिध रोवे ● जिल्लामिल प्राण्डिया मार्क्के ● उर्ज्यक रूके ● (त्रहेनता प्रार्थे

কু কু రెయిన్బో रेनबो साधी RAINBOW SATHI

சாத்தி

ரெயின்போ



### **Daughter wants** to become a **District Collector**

Tam 33 years old. I am from Uppal Ringroad. ■ My daughter's name is Gayathri. I came to know about Rainbow Home from Yellaiah Sirhe. When she was with me, I was worried about my daughter's education. But now I am happy that she is studying properly.

I have seen many changes in her after coming here. She is studying well, her health is good now. She is happy at Rainbow Home. I hope her to study well because she wants to become District Collector one day. During COVID pandemic Rainbow Home provided me one month provision. But now, I am capable of taking care of my child when she comes back to me.

Ramesh, Father of Gayathri, Amanvedika Rainbow Home, Medibawi, Hyderabad

## बेटी कलेक्टर बनना चाहती हैं

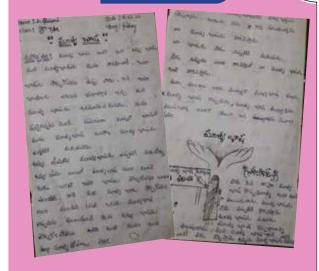
में री उम्र 33 साल है, मैं उप्पल रिंगरोड में रहता हूं। मेरी बेटी का नाम गायत्री है। मुझे रेनबो होम के बारे में येलैय्या सरहे से पता चला था। जब बेटी मेरे पास थी तो मैं उसकी पढाई को लेकर परेशान रहता था। लेकिन अब मुझे खुशी है कि वह अच्छे से पढाई कर रही है।

यहां आने के बाद से उसमें काफी बदलाव देखने को मिले हैं। वह अच्छे से पढ़ रही है, उसकी सेहत भी ठीक है। वह रेनबो होम में खुश है। मुझे उम्मीद है कि वह अच्छे से पढेगी क्योंकि उसका सपना है कि वह बढ़े होकर एक दिन जिला

कोविड महामारी के दौरान रेनबो होम से मुझे एक महीने का राशन मिला था। लेकिन अब तो मैं इसमें सक्षम हं कि जब भी मेरी बेटी वापस मेरे पास रहने के लिए आए तो मैं उसकी देखभाल कर सकुं।

> रमेश, गायत्री के पिता, अमनवेदिका रेनबो होम, मेडिबावी, हैदराबाद

#### Hvderabad





### First Prize for Shravani

n 21st February 2022, many schools and institutions observed International Mother Tongue Day. The Government School Musheerabad, Hyderabad also celebrated and organized an Essay Writing competition. Rainbow Home Student- M Shravani from 9th grade was awarded first prize in the competition.

### श्रवणीं को पहला पुरस्कार

21 फरवरी 2022 तो कई स्कूलों व संस्थाओं ने अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा जिवस मनाया। हैदराबाद में मुशीराबाद के गवर्मेंट स्कूल में भी इस दिवस को मनाने के साथ-साथ एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रेनबो होम की छात्रा एम श्रावणी, कक्षा 9 ने इस प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार जीता.



রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬ್ಯೋ

சாத்தி

ரெயின்போ

გ ფ

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

**Bangalore Creating a** मंच पर दिखाया niche on the stage अभिनय का हुनर

💶 मारे रेनबो होम के युवाओं ने कई अलग-अलग क्षेत्रों ए में अपनी काबिलियत का झंडा गाड़ा है और इनमें थियेटर भी एक है। बैंगलोर के एएनसी होम के दो युवाओं आशा व मणि को हाल ही में प्रतिष्ठित रंग शंकरा थियेटर के मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला। आशा बीए प्रथम वर्ष में हैं और मणि डिप्लोमा इन एजुकेशन के प्रथम वर्ष में। दोनों को ही डांस व ड्राम में काफी रुचि रही है। उन्होंने बैंगलोर में समुदाय थियेटर ग्रुप में जाना शुरू किया था। पिछले दिनों 24 व 25 मार्च को उन्हें जुगाड़ी क्रॉस नाटक में अभिनय का मौका मिला। जाने-माने कन्नड लेखक तेजस्वी का लिखा यह नाटक ग्रामीण पर्यावरण के रहस्य के बारे में है। आशा व मणि, दोनों ही के लिए यह मंच पर अभिनय करने का पहला मौका था और दोनों ही ने इसे बखूबी निभाया, और इस तरह अपने भविष्य के लिए नया रास्ता गढा।

**\**Joung Adults from our various Rainbow Homes **L** have proved their mettle in various fields. Theatre is also one of them. Young Adults Asha and Mani from ANC Rainbow Home, Bangalore got a chance to perform on the stage at Ranga Shankara theatre recently. Asha is studying in BA 1st year and Mani is also in the 1st year of Diploma in Education. Both of them were quite interested in dance as well as drama. They joined Samudaya Theatre Group in Bangalore and finally they got to perform on 24th and 25th March this year in a play- Jugari Cross. Written by famous Kannada writer Tejashwi, this play is related to mystery of a village environment. For both Asha and Mani, this was the first experience of performing on stage and both came out in flying colours, thus creating a new path for their lives.

জ

**BILIB** 

ரெயின்போ

రెయిన్బో

साधी

रेनबो

RAINBOW SATHI







RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठెయిన్బో సాథీ ● ரெயின்போ சாத்தி ● ್ಶೆನ್ಒೇ ಸಾಥಿ ● রেইনবো সাখী

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय केंक्रे ● जिल्लामिलंडिया मार्क्रेक्री ● र्रुंक्थिल काक्रे ● त्रिरंगदा प्राशी

ரெயின்போ சாத்தி

মু জ

రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

Tlive in Pahadi Tola of Ranchi. I came **L** to know about Rainbow Home in 2018. Nisha madam from Rainbow Homes used to come to our locality and have meetings. She told us that Rainbow Home is about to open in Ranchi where homeless children will be admitted. When the survey started in Ranchi, the names of our children were also added. My child used to roam here and there all day and he also got addicted to drugs. I always thought when this kind of home opens here, then we will put our children in this home, where our children will get education, health and a safe place to live.

We have two daughters and a son. My son has been living in the Rainbow Home for the last three years. I do household chores and go to the houses and do the cleaning work. I am happy that my kids are staying at Rainbow Home. By staying in Rainbow Home, the son remains clean and is also studying properly. Now his behaviour has also improved. He remains very disciplined. My son has a dream of joining the army. And I hope his dream will definitely come true. Seeing my son, now I have also started living more hygienically and I have also stopped taking drugs. I am thankful to Rainbow Home program and also to dedication of my child.

Sita devi, Mother of Ashish Kumar Singh, Rainbow Home, Ranchi



# बेटा रेनबो होम गया मेरा जीवन भी सुधरा

रांची के पहाड़ी टोला में रहती हूं। रेनबो होम के बारे में मुझे 2018 में पता लगा था। रेनबो होम से निशा मैडम हमारे मोहल्ले में आती थी और मीटिंग करती थी। तभी उन्होंने बताया था कि रांची में रेनबो होम खुलने वाला है जहां बेघर बच्चों को रखा जाएगा। जब रांची में सर्वे शरू हुआ तो हमारे बच्चों का भी नाम लिखा गया। मेरा बच्चा पूरा दिन इधर उधर घूमता था और वह नशे का भी आदी हो गया था। तब मैंने सोचा था कि जब इस तरह का होम खल रहा है तो हमें अपने बच्चे को इस होम में डालेंगे।

यहां हमारे बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य और एक सुरक्षित स्थान रहने को मिलेगा। हमारी दो बेटियां और एक बेटा है। मेरा बेटा पिछले तीन सालों से होम में रह रहा है। मैं घरों में जा कर साफ-सफाई का काम करती हूं। मेरे बच्चे रेनबो होम में रह रहे हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। रेनबो होम में रह कर बच्चा साफ सुथरा रहता है और पढ़ाई-लिखाई से भी जुड़ चुका है। अब इसके व्यवहार में भी बदलाव आया है। वह बहुत अनुशासन में रहता है। मेरे बेटे का सपना है कि वह आर्मी में शामिल होना चाहता है। और मुझे लगता है कि उसका यह सपना ज़रूर पूरा होगा। बच्चे को देख कर अब मैं भी सफाई से रहने लगी हूँ और मैंने भी नशा करना छोड दिया है। हमारे बच्चे की लगन और रेनबो होम के प्रोग्राम की मैं बहुत शुक्रगुजार हूं।

सीता देवी, आशीष कुमार सिंह की मां, रेनबो होम, रांची

# बेटी के भविष्य को लेकर हैं पुत्र निश्चिंत

🖚 म मासी बाड़ी जगन्नाथपुर में रहते है। हम आदिवासी, 🛡 उरांव सम्दाय से हैं। हम दोनों रेजा-कुली (दिहाड़ी मजदूरी) का काम करते हैं। कभी काम मिलता है तो कभी नही। 2018 में सर्वे के दौरान निशा दीदी मासी बाडी आई थीं। तब हमें हॉस्टल के बारे में पता चला था और जिस दिन हॉस्टल का शुरुआत हुई थी, उसी दिन हम श्रेया को लेकर होस्टल आए और तब से ही वह वही रहती है। श्रेया की पांच बहने और हैं, श्रेया सब से छोटी है। उसे अब होम में रहते हुए तीन साल हो

मेरी बच्ची होम में है तो हमें अच्छा लगता है और वह भी बोलती है कि अब उसका पढाई में मन लगता है। बच्ची को लेकर हमारी यही उम्मीद है कि पढ़-लिख कर भविष्य में कुछ करेगी और हमारा नाम रोशन करेगी। मेरी बेटी जब से रेनबो होम में रह रही है तब से हमारी बहुत मदद हुई है और मैं अपनी इस बेटी के भविष्य को ले कर निश्चिंत हूं।

चिंतामणि देवी, श्रेया टोप्पो की मां, रेनबो होम, रांची

## Now, no worry about our daughter's future

**▼ ∧ /** e live in Masi Bari Jagannathpur. **V** We belong to Adivasi, Oraon community. We both work as Reza-Coolie (daily wagers). Sometimes we get work, sometimes don't. In 2018 Nisha didi came to Masi Bari for a survey. Then we came to know about the hostel. And the day the hostel was inaugurated, we came to the hostel with Shreya and since then she is here at Rainbow Home. Shreya has five sisters, and she is the youngest one. It has been three years since she came to Rainbow Home.

Since our daughter is at home, we are happy for her and she too says that she now likes studying. We hope that by studying well she will do something big in future. Because, she has been living in Rainbow Home, it has been a great help to us and we are no more worried about our daughter's future.

**Chintamani Devi, Mother of Shreya** Toppo, Rainbow Home, Ranchi



রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬೋ ಸಾಥಿ

**E** 

**BILIDA** 

ரெயின்போ

কু কু

రెయిన్బో

रेनबो साधी

RAINBOW SATHI



ரெயின்போ சாத்தி

రెయిన్బో

रेनबो साधी

#### **PARENTS SPEAK - RANCHI**

# We Know, Our Children Will Fly High



Tlive in Muktidham Harmu, Ranchi, I **L**belong to a caste which is considered as lower. When the survey was being done by Nisha madam in Ranchi in 2018, we got the information that such a home is about to open at Ranchi, where even those children will be admitted who are into addiction and they will be brough into mainstream education. My son also used to spend whole day outside, collecting garbage and then using that money to get drugs. Therefore, I made up my mind to send him to the Rainbow Home. I have two sons and a daughter. I work as a midwife.

My child was admitted to the home on 30th March 2019. Just a few months later there was a state level drawing competition in which children from all over Jharkhand participated. Winners were awarded by the Governor of Jharkhand, Draupadi Murmu. My son came on second position. When I heard this news and saw the picture, I had tears in my eyes. This was the same kid who used to roam here and there on the streets. I am very happy to see this change in the child by being at the Sneh Ghar home. I believe my son will achieve something big by staying at Rainbow Home.

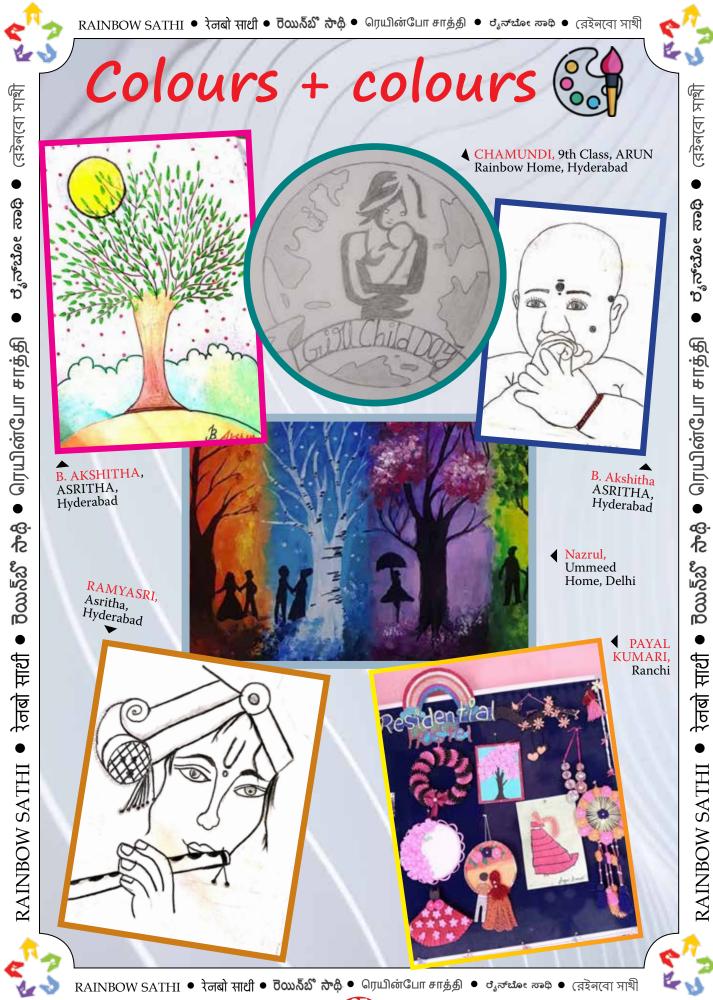
Sulekha Devi, Mother of Aniket Lohra, Sneh Ghar Rainbow Home, Ranchi

# बच्चे यहां से कुछ न कुछ बनकर निकलेंगे

📆 रांची के मुक्तिधाम हरमू में रहती हूं। मैं जिस जाति से हं उसे निचली समझा जाता है। जब 2018 में रांची में निशा मैडम के द्वारा सर्वे हुआ था तो उसी समय जानकारी मिली थी कि इस तरह का होम खुलने वाला है, जहां नशा करने वाले बच्चों को भी रखा जाएगा और उन्हें पढाई से जोड़ा जाएगा। मेरा बच्चा पूरा दिन बाहर घूमता था, कचड़ा बीनता था फिर उसी पैसे से नशा करता था। तभी मैंने सोच लिया था और उसे होम में भेजने का मन बना लिया था। मेरे दो बेटे और एक बेटी है। मैं दाई का काम करती हूं।

मेरा बच्चा 30 मार्च 2019 को होम में भर्ती हुआ था तो उसके कुछ महीनों बाद स्टेट लेवल ड्राइंग कंपीटिशन हुआ था जिसमे पूरे झारखंड के बच्चों ने भाग लिया था और विजेता को झारखंड की राज्यपाल द्रोपदी मुर्मू द्वारा पुरस्कार भी दिया गया था जिसमे मेरा बेटा दूसरे नम्बर पर आया था। जब मैंने यह खबर सुनी और तस्वीर देखी थी तो मेरी आँखों मे पानी आ गया था। यह वही बच्चा है जो सड़को पर इधर-उधर घुमता रहता था। स्नेह घर में रहने से बच्चे में यह बदलाव देख कर मुझे बहुत खुशी होती है। मुझे लगता है मेरा बेटा होम में रहकर कुछ न कुछ बन कर निकलेगा।

सलेखा देवी, अनिकेत लोहरा की मां, स्नेह घर, रेनबो होम, रांची



RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय रोक ● जिल्लामिल उपार्थ का विकास साथी • उपार्थ का विकास साथी • उपार्थ का विकास साथी

ரெயின்போ

გ ფ

రెయిన్బో

रेनबो साथी

RAINBOW SATHI

साधी

रेनबो

SATHI

RAINBOW

#### **PARENTS SPEAK**

प्राथी

ரெயின்போ சாத்தி

ъ Ф

రెయిన్బో

साधी

रेनबों

SATHI

RAINBOW

B of mor district wilder removed the same survivery. The Est

to save a demand and which bright, range of things, being a factor and the first bright and the factor of the fact commenced and district 10 face, bein the 4th the children and Separe maining many daying and drang.

 अर्थ लगा, त्यापुर्वाल जिल्लाक सुरुवाल मानुन स्थापुर्व सुनुवाल काला. ಕೆಲ್ಲದಿಂದ ಬಂದ ವೆಚರ ಕಂಗತಿಕ್ಕಳ ಕುಳಿಯಾಗಿ ಮಾಡು ಹೇಳುತ್ತೇವರು ಈಗ ನನ್ನ ಮಡೆ ಮೈ ಮಾರು ಎಲ್ಲವೂ ಕೇರುತ್ತದೆ ಸರವಾ ಕಾರೇಷಕ ಹೆಸಗಳುತ್ತಿ.

े तंत्र तोम इतते दोहता केलावते तेत्र तार्वकरते करते हैं उठाउँक तेत्रीकर तोष्ट्रा के दोवते अर्थ केलाव तालकरते करते हैं की साथि पहले देते हैं जाते पर - AVA SASE BIRTH BEEN AVA

# बेटा अब पूरी तरह बदल गया है

रा नाम पार्वती है और मैं 56 साल की हूं। मैं पत्थर वगैरह तोड़ने, मजदूरी का काम करती हूं। मैंने तीन साल पहले अपने बेटे को बेहतर बढ़ाई, देखरेख व सुरक्षा के लिए नीड बेस इंडिया रेनबो होम में भरती कराया था। हम लोग मूल रूप से आंध्र प्रदेश से हैं। हमारी माली हालत बहुत खराब थी, इसीलिए मैंने बेटे को रेनबो होम में भेजने का फैसला किया

2021-22 के सत्र में एसएसलसी की परीक्षा में 72 फीसदी अंक मिले। इसका सारा श्रेय रेनबो होम को जाता है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है।

था। अब पिछले तीन सालों से उसे बेहतरीन शिक्षा मिल रही है। उसे 2021-22 के सत्र में एसएसलसी की परीक्षा में 72 फीसदी अंक मिले। इसका सारा श्रेय रेनबो होम को जाता है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है।

पिछले तीन साल से उसकी काफी ढंग से देखरेख हो रही है। जब बेटा मेरे पास था तो वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाता था। लेकिन अब उसकी

पढ़ाई नियमित चल रही है और वह बाकी गतिविधियों में भी खब <mark>हिस्सा लेता है जैसे कि डांस, कबड़</mark>डी व वॉलीबाल। उसने हैमर थ्रो में भी बढ़िया प्रदर्शन किया है। मैं इस सबके लिए रेनबो होम की बहुत शुक्रगुजार हूं।

उसके व्यवहार में बहुत बदलाव आया है। रेनबो होम जाने से पहले वह मेरी बात कम सनता था और इतनी इज्जत भी नहीं करता था। लेकिन अब वह पूरी तरह से बदल गया है। मेरा बेटा अब पीयुसी के फर्स्ट ईयर में है। वह होम से बस से कॉलेज जाता है और रोज क्लास में बैठता है।

साक्षात्कारः मणि, पीयूसी फर्स्ट ईयर साइंस, एनएसएन रेनबो होम, बैंगलोर

## MY SON IS TOTALLY CHANGED NOW

y name is Parvathi, and I am 56 years My name is Parvaini, and I am 30 years old. I do masonry work at construction sites. I admitted my son three years ago at Need Base India Rainbow Home for education, care and protection. We are originally from Andhra Pradesh. I decided to send my son here because of our poor financial position. Now he is getting good education for last three years. He earned 72 percent marks in SSLC 2021-2022 batch. Credit for this goes to rainbow home. I am happy for this.

For last three years, he has been very properly taken care of. When my son was with me, he couldn't go to school regularly. But now he is regular in his studies

and is also active in extra activities like dance, kabaddi & volleyball. He has also shown good performance in hammer throw event. He is good in spoken English as well. I am quite thankful to Rainbow Home for

all this. There is change in his behaviour as well. Before going to Rainbow Home, my son will not respect me or obey my words. But, now he is totally changed. My son is now pursuing 1st year PUC. He goes to college from Home, travels in bus and attends his classes

**Parvathi** 

Interviewer: Mani, PUC 1st year science, NSN Rainbow Home, Bangalore

daily.

He earned 72 percent marks in SSLC 2021-2022 batch. **Credit for** this goes to rainbow home. I am happy for

রেইনবো সাখী

ರೈನ್ಬ್ಯೋ

சாத்தி

ரெயின்போ

З ф

రెయిన్బో

रेनबो साथी

SATHI

RAINBOW

রেইনবো সাখী

කුලෙ

EN.

**FILE** 

ரெயின்போ

ъ Ф

రెయిన్బో

रेनबो

SATHI

RAINBOW



this.

## **MY MOTHER'S** LIFE ALSO **CHANGED**

My name is Nagesh, when I was 6 year old, I joined ABH home. Before I came here, my mother used to work in houses. My father had three wives. His first wife divorced him due to some issues and he did not care about his second wife. My mother Rajni is his third wife.

Father always had arguments with my mother. He fought with her for money and pity small things. He will keep scolding her. He will not let me and my sister play and do anything else. Occasionally he used to beat my mother in front of us. My father used to blame us for spending money, for food etc. My mother had to suffer due to shortage of food.

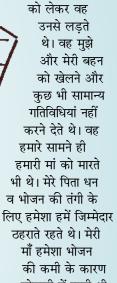
Then one day someone introduced my mother to Nirmala madam. She told my mother about Rainbow Home. After knowing about that, my mother decided to put me in the Rainbow Home. After my joining at Rainbow Home, things started changing for my mother. The problems started subsiding and food shortage problem was also resolved a bit. My mother got a job. Then I realized that it was better to stay at Rainbow Home. Not only for me, but for my mother as well. Lot of problems were solved. Even during lockdown because of pandemic, Rainbow Home team helped my parents with ration provision. Rainbow Home team also helped my parents in obtaining Aadhar Card, Birth certificates, caste certificates etc.

Nagesh, Amanvedika Rainbow Home, Vijaynagar Colony, Hyderabad

# मेरी मां की जिंदगी भी बदली

📘 रा नाम नागेश है। जब मैं 6 साल का था तब मैं एबीएच होम में आया था। मेरे यहां आने से पहले मेरी मां दूसरे घरों में काम करती थीं। मेरे पिता की तीन पत्नियां थीं। पहली पत्नी ने उन्हें कुछ समस्या के कारण तलाक दे दिया था। दूसरी पत्नी की वह खुद ही परवाह नहीं करते थे। मेरी माँ रजनी उनकी तीसरी पत्नी है।

मेरी मां से वह हमेशा झगड़ा करते रहते थे। पैसों और हर छोटी-छोटी बात



ने मेरी माँ को निर्मला मैडम से मिलाया। उन्होंने मेरी माँ को रेनबो होम के बारे में बताया। सबकुछ जानने के बाद मेरी माँ ने मुझे रेनबो होम में डालने का फैसला किया। रेनबो होम में जाने के बाद मेरी मां के लिए हालात बदलने लगे। समस्याएं कम होने लगीं। भोजन की कमी का संकट भी कम हो गया। फिर मेरी माँ को नौकरी मिल गई। तब मुझे अहसास हुआ कि रेनबो होम में रहना ही बेहतर है, न केवल मेरे लिए बल्कि मेरी मां के लिए भी। रेनबो होम में रहने से बहुत सारी परेशानियाँ कम हो गई। इतना ही नहीं, रेनबो होम से मेरे माता-पिता को लॉकडाउन में राशन के रूप में बहुत मदद हो गई थी। रेनबो होम टीम ने मेरे माता-पिता को आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र आदि प्राप्त करने में

> नागेश, अमनवेदिका रेनबो होम, विजयनगर कॉलोनी, हैदराबाद





SATHI

RAINBOW

රුගෙ

龟

**BILIDA** 

ரெயின்போ

# **EVERYBODY IS EQUAL IN FRONT OF LAW**

It means that in the eyes of law there A should be no differences like caste, religion, colour, class and wealth. Earlier there used to be many divisions in the society, they still are. Upper caste people used to keep the lower caste people away. Similarly, rich were never interested in the poor and looked down upon them. People from the lower castes were not allowed to participate in anything like in schools, temple activities etc. All these are even followed in the schools, where teachers used to treat rich kids differently from poor kids, they are disguised while teaching to the poor.

All these differences were very commonly followed. Great people like Savitri Bai Phule also faced this. People used to discriminate her because she was from lower caste, people used to talk bad

about her because of teaching lower caste people. Similarly, Dr. B.R. Ambedkar was not allowed in the school because of his caste but still Ambedkar used to stand outside and learn the lessons.

But according to Article 14 pf the constitution everybody is equal in the society. Divisions of caste, religion, colour, class and wealth have no

place according to law in society. If anybody is treated badly because of these differences, they should be punished by the law. Nobody is big or small, everybody is supposed to be equal in the eyes of the law.

K. Lavanya, 10th Class, ARUN Rainbow home, Lalapet, Hyderabad



## कानून के सामने सब बराबर हैं

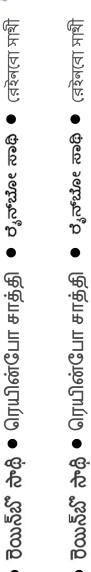
सका मतलब है कि कानून की निगाहों में जाति, धर्म, रंग, वर्ग और संपत्ति जैसा कोई अंतर नहीं है। किसी समय समाज में मतभेद होता था, अब भी कई जगह है। ऊंची जाति के लोग निचली

जाति के लोगों से दूरी बनाकर रखते थे, अमीरों को गरीबों में कोई दिलचस्पी नहीं थी और वे गरीबों को नीची निगाहों से देखते थे। निचली जाति के लोगों को स्कूल, मंदिर आदि किसी भी चीज़ में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। भेदभाव स्कूलों के भीतर भी किया जाता है, शिक्षक अमीर बच्चों और गरीब बच्चों से अलग-अलग व्यवहार करते थे, वे गरीबों को पढाते समय अलग ही रूप में होते हैं।

ये सारे मतभेद हर जगह दिखाई देते थे। सावित्रीबाई फुले जैसे महान लोगों को भी इसका सामना करना पडा। लोग उसके साथ भेदभाव करते थे क्योंकि वह निचली जाति से थी, नीची जाति के लोगों को पढ़ाने के कारण लोग उसके बारे में बूरी बातें करते थे। डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को भी उनकी जाति के कारण स्कूल में जाने की अनुमित नहीं थी लेकिन फिर भी वह बाहर खड़े होकर पढाई करते थे।

लेकिन भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 के अनुसार समाज में सभी समान हैं। जाति, धर्म, रंग, वर्ग व संपत्ति के हिसाब से कानून की नजर में कोई भेद नहीं है। यदि इन भेदों के कारण किसी के साथ गलत व्यवहार किया जाता है तो उसे दंडित किया जाना चाहिए। कहा तो यही जाता है कि कोई भी बडाया छोटा नहीं होता, कानन व संविधान के हिसाब से सब बराबर होते हैं।

> के. लावण्या 10वीं, अरुण रेनबो होम, लालापेट, हैदराबाद



प्रार्थना

Prayer

Thank you for this beautiful life as part of creation! WE believe, we wish, to live in friendship and mutual

respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

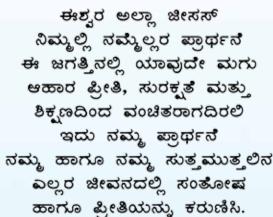
We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge. God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

र्इश्वर अल्लाह

हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।







SATHI



साधी

रेनबो

SATHI



रेनबो साधी

RAINBOW SATHI

RAINBOW SATHI ● रेनबो साथी ● ठिळार्रिय केंक्रे ● जिल्लामिलंडिया मार्क्रेक्री ● र्रुंक्थिल काक्रे ● त्रिरंगदा प्राशी

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • ठि००५ के • जिल्लामां कि जिल्लामां का के कि जिल्लामां का के कि जिल्लामां का शिल्लामां का विकास का कि जिल्लामां का शिल्लामां का विकास का कि जिल्लामां का शिल्लामां का विकास का कि जिल्लामां का विकास का कि जिल्लामां का विकास का कि जिल्लामां के जिल्लामां का कि जिल्लामां कि जिल्लाम

